धर्मामृत अनगार(फोल्डर नं. ००१०१५)

सम्पादन-अनुवाद – सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री

मुख्य टाइटल

प्रधान सम्पादकीय

प्रस्तावना

विषय सूची

प्रथम अध्याय

सिद्धोंको नमस्कार ---------- १

प्रसंग वश सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक् चारित्रकी चर्चा ---------- २-५

अर्हन्तको नमस्कार ---------- ७

दिव्यध्वनिकी चर्चा ----------८

गणधर देवादिका स्मरण ---------- ९

जिनागमके व्याख्याता आरातीय आचार्योंका स्मरण ---------- १०

धर्मोपदेशका अभिनन्दन ---------- ११

धर्मामृतके रचनेकी प्रतिज्ञा ----------१३

प्रसंगवश मंगल आदिकी चर्चा ---------- १४

सच्चे धर्मपदेशकों की दुर्लभता ---------- १६

धर्मोपदेशक आचार्यके सद्गुण ---------- १७

निकट भव्य श्रोताओंकी दुर्लभता ---------- २०

अभव्य उपदेशका पात्र नहीं ---------- २२

ऐसा गुण विशिष्ट भव्य ही उपदेशका पात्र ---------- २३

सदुपदेशके बिना भव्यकी भी मति धर्ममें नहीं लगती ---------- २४

चार प्रकारके श्रोता ---------- २५

विनयका फल ---------- २५

व्युत्पन्न उपदेशका पात्र नहीं ---------- २६

विपर्ययग्रस्त भी उपदेशका पात्र नहीं ---------- २६

धर्मका फल ---------- २७

धर्ममें अनुरागहेतुक पुण्य बन्ध भी उपचारसे धर्म है ---------- २८

धर्मका मुख्यफल ---------- ३०

पुण्यकी प्रशंसा ----------३१

इन्द्रपद, चक्रिपद, कामदेवत्व, आहारक शरीर आदि पुण्योदयसे प्राप्त होते हैं ---------- ३२-४१

गर्भादि कल्याणक सम्यक्त्व सहचारी पुण्यविशेषसे होते हैं ---------- ४४

धर्म दुःखको दूर करता है ---------- ४५

सगर, मेघवाहन और रामभद्रका दृष्टान्त ---------- ४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्म नरकमें भी घोर उपसर्गको दूर करता है ---------- ४७
पाप कर्मके उदयमें भी धर्म ही उपकारी है ---------- ४८
दृष्टान्त द्वारा पुण्यके उपकार और पापके अपकारका समर्थन ---------- ४९
प्रद्युम्नका दृष्टान्त ---------- ५०
पुण्य पापमें बलाबल विचार ---------- ५१
२२ श्लोकों द्वारा मनुष्य भवकी निस्सारताका कथन ---------- ५२-५७
मनुष्य पर्याय बुरी होनेपर भी धर्मका अङ्ग है ---------- ६०
धर्म विमुखका तिरस्कार ---------- ६२
धर्म शब्दका अर्थ ---------- ६२
निश्चय रत्नत्रयका लक्षण ---------- ६४
सम्पूर्ण रत्नत्रय मोक्षका ही मार्ग ---------- ६६
मोक्षका उपाय बन्धनका उपाय नहीं हो सकता ---------- ६७
व्यवहार रत्नत्रयका लक्षण ---------- ६८
सम्यग्दर्शन आदिके मल ---------- ७१
निश्चय निरपेक्ष व्यवहारनयका उपयोग स्वार्थका नाशक ---------- ७२
व्यवहारके बिना निश्चय भी व्यर्थ ---------- ७३
व्यवहार और निश्चयका लक्षण ---------- ७४
शुद्ध और अशुद्ध निश्चयका स्वरूप ---------- ७६
सद्भूत और असद्भूत व्यवहारका लक्षण ---------- ७७
अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नयका कथन ---------- ७७
उपचरित असद्भूत व्यवहारनयका कथन ---------- ७८
नयोंको सम्यक्पना और मिथ्यापना ---------- ७९
एक देशमें विशुद्धि और एक देशमें संक्लेशका फल ---------- ८०
अभेद समाधिकी महिमा ---------- ८२

द्वितीय अध्याय

सम्यग्दर्शनको भी मुक्तिके लिये चारित्रकी अपेक्षा करनी पड़ती है ---------- ८४
मिथ्यात्वका लक्षण ---------- ८६
मिथ्यात्वके भेद और उसके प्रणेता ---------- ८७
एकान्त और विनयमिथ्यात्वकी निन्दा ---------- ८९
विपरीत और संशय मिथ्यात्वकी निन्दा ---------- ९०
अज्ञान मिथ्यादृष्टियोंके दुष्कृत्य ---------- ९१
प्रकारान्तरसे मिथ्यात्वके बेद---------- ९२
३६३ मतोंका विवरण ---------- ९३-९५
मिथ्यात्वका विनाश करनेवालेकी प्रशंसा ---------- ९६
मिथ्यात्व और सम्यक्तवका लक्षण---------- ९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्वकी सामग्री ---------- ९९
परम आप्तका लक्षण ---------- १००
आप्तकी सेवाकी प्रेरणा ---------- १०१
आप्तका निर्णय कैसे करें ---------- १०३
आप्त और अनाप्तके द्वारा कहे वाक्योंका लक्षण ---------- १०५
आप्तके वचनमें युक्तिसे बाधा आनेका परिहार ---------- १०५
रागी आप्त नहीं ---------- १०६
आप्ताभासोंकी उपेक्षा करो ---------- १०७
मिथ्यात्वपर विय कैसे ---------- १०९
जीवादि पदार्थोंका युक्तिसे समर्थन ----------११२
जीवपदार्थका विशेष कथन ----------१२१
सर्वथा नित्यता और सर्वथा क्षणिकतामें दोष ---------- १२२
अमूर्त आत्माके भी कर्मबन्ध---------- १२४
आत्माके मूर्त होनेमें युक्ति ---------- १२५
कर्मके मूर्त होनेमें प्रमाण ---------- १२६
जीव शरीर प्रमाण ---------- १२६
प्रत्येक शरीरमें भिन्न जीव ---------- १२७
चार्वाकका खण्डन ---------- १२७
चेतनाका स्वरूप ---------- १२८
किन जीवोंके कौन चेतना ---------- १२९
आस्रव तत्त्व ----------१३१
भावास्रवके भेद ---------- १३३
बन्धका स्वरूप ---------- १३५
बन्धके भेदोंका स्वरूप ---------- १३७
पुण्यपाप पदार्थका निर्णय ---------- १३९
संवरका स्वरूप और भेद ---------- १४०
निर्जराका स्वरूप ---------- १४०
निर्जराका भेद ---------- १४१
मोक्षतत्त्वका लक्षण ---------- १४२
मुक्तात्माका स्वरूप ---------- १४४
सम्यक्तवकी सामग्री---------- १४५
पाँच लब्धियाँ ---------- १४७
निसर्ग अधिगमका स्वरूप---------- १४९
सम्यक्त्वके भेद ---------- १५१
प्रशम आदिका लक्षण ---------- १५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्वके सद्भावके निर्णयका उपाय ---------- १५४
औपशमिक सम्यक्त्व और क्षायिक सम्यक्तवका अन्तरंग कारण ---------- १५४
वेदक सम्यक्त्वका अन्तरंग कारण ---------- १५५
वेदककी अगाढ़ता, मालिन्य तथा चलत्वका कथन ---------- १५६
आज्ञा सम्यक्त्व आदिका स्वरूप ---------- १५७
आज्ञा सम्यक्तवके उपाय ---------- १५८
सम्यग्दर्शनकी महिमा ---------- १५८
सम्यक्त्वके अनुग्रहसे ही पुण्य भी कार्यकारी ---------- १६२
सम्यग्दर्शन साक्षात् मोक्षका कारण ---------- १६३
सम्यक्त्वकी आराधनाका उपाय ---------- १६५
सम्यक्त्वके अतीचार ---------- १६६
शंकाका लक्षण ---------- १६६
शंकासे हानि ---------- १६८
कांक्षा अतिचार ---------- १६९
कांक्षा करनेवालोंके सम्यक्त्वके फलमें हानि ---------- १७१
कांक्षा करना निष्फल ---------- १७१
आकांक्षाको रोकनेका प्रयत्न करो ---------- १७२
विचिकित्सा अतिचार ---------- १७२
अपने शरीरमें विचिकित्सा न करनेका माहात्म्य ---------- १७२
विचिकित्साके त्यागका प्रयत्न करो ---------- १७३
परदृष्टि प्रशंसा नामक सम्यक्तवका मल ---------- १७४
रअनायतन सेवाका निषेध ---------- १७४
मिथ्यात्व सेवनका निषेध ---------- १७५
मदरूपी मिथ्यात्वका निषेध ---------- १७५
जातिमद कुलमदका निषेध ---------- १७६
सौन्दर्यके मदके दोष ---------- १७७
लक्ष्मीके मदका निषेध ---------- १७७
शिल्पकला आदिके ज्ञानका मद करनेका निषेध ---------- १७८
बलके मदका निषेध ---------- १७९
तपका मद दुर्जय है ---------- १७९
पूजाके मदके दोष ---------- १८०
सात प्रकारके मिथ्यादृष्टि त्यागने योग्य ---------- १८०
जैन मिथ्यादृष्टि लभी त्याज्य ----------१८१
मिथ्याज्ञानियोंसे सम्पर्क निषेध ---------- १८२
मिथ्याचारित्र नामक अनायतनका निषेध ---------- १८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिंसा-अहिंसा माहात्म्य ---------- १८४
तीन मूढताका त्याग सम्यग्दृष्टिका भूषण ---------- १८४
उपगूहन आदि न करनेवाले सम्यक्तवके वैरी ---------- १८६
उपगूहन गुणका पालन करो ---------- १८७
स्थितिकरण गुणका पालन करो ---------- १८८
वात्सल्य गुणका पालन करो ---------- १८८
प्रभावना गुणका पालन करो ---------- १८९
विनय गुण का पालन करो ---------- १९०
प्राकारान्तरसे सम्यक्त्वकी विनय ---------- १९३
अष्टांगपुष्ट सम्यक्त्वका फल ---------- १९३
क्षायिक तथा अन्य सम्यक्त्वोंमें साध्य-साधन भाव ---------- १९४
तृतीय अध्याय
श्रुतकी आराधना करो ---------- १९७
श्रुतकी आराधना परम्परासे केवलज्ञानमें हेतु ---------- १९८
मति आदि ज्ञानोंकी उपयोगिता ---------- २००
पाँचों ज्ञानोंका स्वरूप ---------- २०२
श्रुतज्ञानकी सामग्री व स्वरूप---------- २०३
श्रुतज्ञानके बीस भेद ---------- २०४
प्रथमानुयोग ---------- २०८
करणानुयोग ---------- २०९
चरणानुयोग ---------- २१०
द्रव्यानुयोग ---------- २१०
आठ प्रकारकी ज्ञानविनय ----------२११
ज्ञानके बिना तप सफल नहीं ---------- २१२
ज्ञानकी दुर्लभता ---------- २१४
मनका निग्रह करके स्वाध्याय करनेसे दुर्धर संयम भी सुखकर ---------- २१५
स्वाध्यातपकी उत्कृष्टता ---------- २१६
श्रुतज्ञानकी आराधना परम्परासे मुक्तिका कारण ---------- २१६
चतुर्थ अध्याय
चारित्राराधनाकी प्रेरणा ---------- २१७
चारित्रकी अपूर्णतामें मुक्ति नहीं ---------- २१८
दया चारित्रका मूल ---------- २१९
सदय और निर्दयमें अन्तर ---------- २१९
दयालु और निर्दयका मुक्तिके लिए कष्ट उठाना व्यर्थ ---------- २२०
विश्वासका मूल दया ---------- २२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक बार भी अपकार किया हुआ बार-बार अपकार करता है ---------- २२१
दयाकी रक्षाके लिए विषयोंको त्यागो ---------- २२२
इन्द्रियाँ मनुष्यकी प्रज्ञा नष्ट कर देती हैं ---------- २२३
विषयलम्पटकी दुर्गति ---------- २२३
विषयोंसे निस्पृहकी इष्टसिद्धि ---------- २२३
व्रतका लक्षण---------- २२४
व्रतकी महिमा ---------- २२५
व्रतके भेद तथा स्वामी ---------- २२६
हिंसा का लक्षण ---------- २२६
दस प्राण---------- २२७
त्रसके भेद---------- २२७
द्रव्येन्द्रियोंके आकार ---------- २२८
त्रसकोंका निवासस्थान ---------- २२८
एकेन्द्रिय जीव ---------- २२९
वनस्पतिके प्रकार ---------- २३१
साधारण और प्रत्येककी पहचान ---------- २३२
निगोतका लक्षण ---------- २३२
निगोतके भेद ---------- २३३
पृथ्वीकाय आदिके आकार ---------- २३४
सप्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित ---------- २३४
पर्याप्तक और अपर्याप्तकोंके प्राण ---------- २३५
पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्तका स्वरूप ---------- २३५
पर्याप्तिका स्वरूप और भेद ---------- २३६
चौदह जीवसमास ---------- २३६
चौदह गुणस्थान ---------- २३७
चौदह मार्गणा ---------- २३८
हिंसाका विस्तृत स्वरूप ---------- २३८
प्रमाद ही हिंसक ---------- २४०
प्रमादके भेद ---------- २४०
समिति गुप्तिके पालकके बन्ध नहीं ---------- २४१
रागादिकी उत्पत्ति ही हिंसा ---------- २४२
एक सौ आठ कारणोंको दूर करनेपर ही अहिंसक ---------- २४२
भावहिंसामें निमित्त परद्रव्यका त्याग आवश्यक ---------- २४३
अजीवाधिकरणके भेद ---------- २४३
हिंसाको दूर रहनेका उपदेश ---------- २४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घनश्री और मृगसेनाका उदाहरण ---------- २४८
अहिंसा व्रतकी भावना ---------- २४९
सत्यव्रतका स्वरूप ---------- २५१
चार प्रकारका असत्य ---------- २५२
चार प्रकारके असत्यके दोष ---------- २५४
सत्यवचन सेवनीय ---------- २५५
असत्यका लक्षण ---------- २५६
मौनका उपदेश ---------- २५७
सत्य व्रतकी भावना ---------- २५८
सत्यवादी धनदेव और असत्यवादी वसुराजाका उदाहरण ---------- २५८
दस प्रकारका सत्यत---------- २५९
नौ प्रकारका अनुभय वचन ---------- २६१
अचौर्य व्रत ---------- २६३
चोरसे माता-पिता भी दूर रहते हैं ---------- २६४
चोरके दुःसह पापबन्ध ---------- २६५
श्रीभूति और वारिषेणका उदाहरण---------- २६५
चोरीके अन्य दोष ---------- २६६
विधिपूर्वक दी हुई वस्तु ग्राह्य ---------- २६७
अचौर्यव्रतकी भावा ---------- २६८
प्राकारन्तरसे भावना ---------- २६९
ब्रह्मचर्यका स्वरूप ---------- २७२
दस प्रकारके अब्रह्मका निषेध ---------- २७३
विषय विकारकारी ---------- २७४
मैथुन संज्ञा ---------- २७५
विषयासक्त प्राणियोंके लिए शोक---------- २७६
कामके दस वेग ---------- २७८
कामीको कुछ भी अकृत्य नहीं ---------- २७९
कामाग्निका इलाज नहीं ---------- २८०
मैथुन संज्ञाके निग्रहका उपाय ---------- २८१
स्त्रीदोषोंका वर्णन ---------- २८२
स्त्री संसर्गके दोष ---------- २८५
कामान्धकी भावनाका तिरस्कार ---------- २९३
वृद्ध पुरुषोंकी संगतिका उपदेश ---------- २९५
वृद्धजनों और युवाजनोंकी संगतिमें अन्तर ---------- २९५
तरुणोंकी संगति अविश्वसनीय ---------- २९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरुण अवस्थामें भी अविकारीकी प्रशंसा ---------- २९७
चारुदत्त और मारिदत्तका उदाहरण---------- २९७
ब्रह्मचर्य व्रतकी भावना ---------- २९८
वीर्यवर्द्धक रसोंके सेवनका प्रभाव---------- २९८
ब्रह्मचर्यमें प्रमाद करनेवाले हँसीके पात्र ---------- २९९
आकिंचन्य व्रत ---------- ३००
परिग्रहके दोष ---------- ३०१
चौदह अभ्यन्तर तथा दस बाह्य परिग्रह ---------- ३०२
परिग्रहत्यागकी विधि ---------- ३०३
परिग्रहीकी निन्दा---------- ३०५
पुत्रके मोहमें अन्धजनोंकी निन्दा ----------३११
पुत्रीके मोहमें अन्धजनोंकी निन्दा ---------- ३१३
पिता-माताके प्रति तथा दास-दासीके प्रति अत्यधिक अनुरागकी निन्दा ---------- ३१४
चतुष्पद परिग्रहका निषेध ---------- ३१६
अचेतनसे चेतन परिग्रह अधिककष्टकर ---------- ३१७
क्षेत्रादि परिग्रहके दोष ---------- ३१९
धनकी ननिन्दा---------- ३२१
परिग्रहसे संचित पापकर्मकी निर्जरा कठिन ---------- ३२४
मोहको जीतना कठिन ---------- ३२५
लक्ष्मीका त्याग करनेवालोंकी प्रशंसा ---------- ३२६
बाह्य परिग्रहमें शरीर सबसे अधिक हेय ---------- ३२७
परिग्रह त्याग करके भी शरीरमें मोहसे क्षति ---------- ३२८
भेदज्ञानी साधुकी प्रशंसा ---------- ३३०
अन्तरात्मामें ही उपयोग लगानेका उपदेश ---------- ३३२
आकिंचन्य व्रतकी भावना ---------- ३३४
पाँच महाव्रतोंके महत्त्वका समर्थन ---------- ३३५
रात्रिभोजनविरति छठा अणुव्रत ---------- ३३५
मैत्री आदि भावनाओंमें नियुक्त होनेकी प्रेरणा ---------- ३३९
आठ प्रवचनमाताओंकी आराधनापर जोर ---------- ३४४
गुप्ति सामान्यका लक्षण ---------- ३४४
मनोगुप्ति आदिके विशेष लक्षण ---------- ३४५
त्रिगुप्ति गुप्तके ही परम संवर ---------- ३४८
मनोगुप्ति और वचनगुप्तिके अतिचार ---------- ३४९
कायगुप्तिके अतिचार ---------- ३५०
पाँच समितियाँ ---------- ३५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईर्यासमितिका लक्षण ---------- ३५२
भाषासमितिका लक्षण ---------- ३५३
एषणासमितिका लक्षण ---------- ३५४
आदान निक्षेपण समिति ---------- ३५५
उत्सर्ग समितिका कथन ---------- ३५६
शीलका लक्षण और विशेषता ---------- ३५८
गुणोंका लक्षण और भेद ---------- ३६२
सम्यक्चारित्रका उद्योतन ---------- ३६४
चारित्रविनय ---------- ३६५
साधु बननेकी प्रक्रिया ---------- ३६७
चारित्रका उद्यमन ---------- ३६९
चारित्रका माहात्म्य ---------- ३७०
संयमके बिना तप सफल नहीं---------- ३७४
तपका चारित्रमें अन्तर्भाव ---------- ३७५
पंचम अध्याय
आठ पिण्ड शुद्धियाँ ---------- ३७७
उद्गम और उत्पादन दोष ---------- ३७८
अधःकर्म दोष ---------- ३७८
उद्गमके भेद ---------- ३७९
औद्देशिक दोष ---------- ३७९
साधिक दोष ---------- ३८०
पूति दोष ---------- ३८०
मिश्र दोष ---------- ३८२
प्राभृतक दोष ---------- ३८२
बलि और न्यस्त दोष ---------- ३८३
प्रादुष्कार और क्रीत दोष ---------- ३८४
प्रामित्य और परिवर्तित दोष ---------- ३८५
निषिद्ध दोष ---------- ३८६
अभिहत दोष ---------- ३८७
उद्भिन्न और अच्छेद्य दोष ---------- ३८७
मालारोहण दोष ---------- ३८८
उत्पादन दोष---------- ३८८
धात्री दोष ---------- ३८९
दूत और निमित्त दोष ---------- ३८९
वनीपक और आजीव दोष ---------- ३९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रोधादि दोष ---------- ३९२
पूर्वसंस्तव और पश्चात् संस्तव दोष ---------- ३९३
चिकित्सा, विद्या और मन्त्रदोष ---------- ३९३
चूर्ण और मूलकर्म दोष ---------- ३९४
अशन दोष ---------- ३९५
शंकित और पिहित दोष ---------- ३९५
म्रक्षित और निक्षपत दोष ---------- ३९६
छोटित दोष ---------- ३९६
अपरिणत दोष ---------- ३९७
साधारण दोष ---------- ३९७
दायक दोष ---------- ३९८
लिप्त दोष ---------- ३९९
वमिश्र दोष ---------- ४००
अंगार, धूम, संयोजमान दोष ---------- ४००
अतिमात्रक दोष ---------- ४०१
चौदह मल ---------- ४०२
मलोंमें महा, मध्यम और अल्प दोष ---------- ४०२
बत्तीस अन्तराय ---------- ४०३
काक अन्तराय ---------- ४०३
अमेध्य, छर्दि और रोधन ---------- ४०४
रुधिर, अश्रुपात और जानु अधःपरामर्श ---------- ४०४
जानु परिव्यतिक्रम, नाभिअधोनिर्गमन अन्तराय ---------- ४०४
प्रत्याख्यान सेवन और जन्तुवध अन्तराय ---------- ४०४
काकादि पिण्डहरण आदि अन्तराय ---------- ४०५
भाजनसंपात और उच्चार ---------- ४०५
प्रस्रवण और अभोज्य गृहप्रवेश ---------- ४०५
पतन, उपवेशन, सन्देश ---------- ४०६
भूमिसंस्पर्श आदि अन्तराय ---------- ४०६
प्रहार, ग्रामहाद आदि ---------- ४०६
शेष अन्तराय ---------- ४०७
मुनि आहार क्यों करते हैं ---------- ४०८
भूखेके दया आदि नहीं ---------- ४०८
भोजन त्यागके निमित्त ---------- ४०९
विचारपूर्वक भोज करनेका उपदेश ---------- ४०९
विधिपूर्वक भोजनसे लाभ ---------- ४११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्यशुद्धि और भावशुद्धिमें अन्तर ---------- ४१२
षष्ठ अध्याय
सम्यक् तप आराधना---------- ४१५
दश लक्षण धर्म ---------- ४१६
क्रोधको जीतनेका उपाय ---------- ४१७
उत्तम क्षमाका महत्त्व ---------- ४१७
क्षमा भावनाकी विधि ---------- ४१७
उत्तम मार्दव ---------- ४२०
अहंकारसे अनर्थ परम्परा ---------- ४२१
गर्व नहीं करना चाहिए ---------- ४२२
मानविजयका उपाय ---------- ४२३
मार्दव भावना आवश्यक---------- ४२४
आर्जवधर्म ---------- ४२५
मायाचारकी निन्दा ---------- ४२६
आर्जव शीलोंकी दुर्लभता ---------- ४२७
माया दुर्गतिका कारण ---------- ४२८
शौचधर्म ---------- ४२८
लोभके आठ प्रकार ---------- ४२९
लोभीके गुणोंका नाश ---------- ४३०
लोभविजयके उपाय ---------- ४३०
शौचकी महिमा ---------- ४३१
लोभका माहात्म्य ---------- ४३१
क्रोधादिकी चार अवस्था ---------- ४३२
सत्यधर्म ---------- ४३५
सत्यव्रत, भाषासमिति और सत्यधर्ममें अन्तर ---------- ४३६
संयमके दो भेद ---------- ४३७
अपहृत संयमके भेद ---------- ४३७
मनको रोकनेका उपदेश ---------- ४३९
इन्द्रिय संयमके लिए मनका संयम ---------- ४४०
विषयोंकी निन्दा ---------- ४४४
मध्यम अपहृत संयम---------- ४४५
प्राणिपीडा परिहाररूप अपहृत संयम ---------- ४४६
अपहृत संयमकी वृद्धिके लिए आठ शुद्धि ---------- ४४६
उपेक्षा संयमका लक्षण ---------- ४४८
उपेक्षा संयमकी सिद्धिके लिएतपकी प्रेरणा ---------- ४४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्यागधर्म ---------- ४५०
आकिंचन्य धर्मीकी प्रशंसा---------- ४५१
ब्रह्मचर्य धर्म ---------- ४५२
अनित्य भावना ---------- ४५३
अशरण भावना ---------- ४५५
संसार भावना ---------- ४५६
एकत्व भावना ---------- ४५८
अन्यत्व भावना ---------- ४६०
अशुचित्य भावना ---------- ४६३
शरीरकी अशुचिता ---------- ४६३
आस्रव भावना ---------- ४६४
संवर भावना ---------- ४६६
निर्जरा भावना ---------- ४६७
आत्मध्यानकी प्रेरणा ---------- ४६८
लोक भावना ---------- ४६९
बोधि दुर्लभ भावना ---------- ४७१
उत्तम धर्मकी भावना ---------- ४७३
धर्मकी दुर्लभता ---------- ४७४
अनुप्रेक्षासे परममुक्ति ---------- ४७५
परीषह जय ---------- ४७६
परीषहका लक्षण ---------- ४७७
परीषह जयकी प्रशंसा ---------- ४७९
क्षुत्परीषह जय ---------- ४८०
तृषापरीषह जय---------- ४८०
शीतपरीषह जय ---------- ४८१
उष्णपरीषहन सहन ---------- ४८१
दंशमसक सहन ---------- ४८१
नाग्न्यपरीषह जय ---------- ४८२
अरतिपरीषह जय ---------- ४८२
सक्त्रीपरीषह सहन ---------- ४८३
चर्यापरीषह सहन ---------- ४८३
निषद्या परीषह ---------- ४८४
शय्या परीषह ---------- ४८४
आक्रोश परीषह ---------- ४८५
वधपरीषह ---------- ४८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

याचना परीषह ---------- ४८५
अलाभ परीषह ---------- ४८६
रोग परीषह ---------- ४८६
तृणस्पर्श सहन ---------- ४८७
मलपरीषह सहन ---------- ४८७
सत्कार पुरस्कार परीषगह ---------- ४८७
प्रज्ञा परीषह ---------- ४८८
अज्ञान परीषह ---------- ४८८
अदर्शन सहन ---------- ४८९
उपसर्ग सहन ---------- ४९०
सप्तम अध्याय
तपकी व्युत्पत्ति ---------- ४९२
तपका लक्षण---------- ४९२
तपके भेद ---------- ४९३
अनशनादि बाह्य क्यों ---------- ४९४
बाह्य तपका फल ---------- ४९५
रुचिकर आहारके दोष ---------- ४९६
अनशन तपके भेद ---------- ४९६
उपवासका लक्षण ---------- ४९७
अनशन आदिका लक्षण ---------- ४९८
उपवासके तीन भेद ---------- ४९८
उपवासके लक्षण---------- ४९९
बिना शक्तिके भोजन त्यागनेमें दोष ---------- ४९९
अनशन तपमें रुचि उत्पन्न करते हैं ---------- ५००
आहार संज्ञाके निग्रहकी शिक्षा---------- ५०१
अनशन तपकी भावना ---------- ५०१
अवमौदर्यका लक्षण ---------- ५०२
बहुत भोजनके दोष ---------- ५०३
मिताशनके लाभ---------- ५०३
वृत्तिपिरिसंख्यान तपका लक्षण ---------- ५०४
रसपरित्यागका लक्षण ---------- ५०६
रसपरित्यागका पात्र ---------- ५०७
विविक्तशय्यासनका लक्षण---------- ५०८
कायक्लेशका लक्षण ---------- ५०९
अभ्यन्तर तप ---------- ५११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रायश्चित्तका लक्षण ---------- ५११
प्रायश्चित्त क्यों किया जाता है ---------- ५११
प्रायश्चित्तकी निरुक्ति ---------- ५१२
आलोचना प्रायश्चित्त ---------- ५१३
आलोचनाका देशकाल ---------- ५१३
आलोचनाके दस दोष ---------- ५१४
आलोचनके बिना तप कार्यकारी नहीं ---------- ५१६
प्रतिक्रमणका लक्षण ---------- ५१७
तदुभयका लक्षण ---------- ५१७
विवेकका लक्षण ---------- ५१८
व्युत्सर्गका स्वरूप ---------- ५१८
तप प्रायश्चित्त ---------- ५१९
आलोचनादि प्रायश्चित्तोंका विषय ---------- ५१९
छेद प्रायश्चित्तका लक्षण ---------- ५२०
मूल प्रायश्चित्त का लक्षण ---------- ५२०
परिहार प्रायश्चित्त का लक्षण ---------- ५२१
श्रद्धान प्रायश्चित्त का लक्षण ---------- ५२३
अपराधके अनुसार प्रायश्चित्त ---------- ५२३
व्यवहार औऱ निश्चयसे प्रायश्चित्तके भेद ---------- ५२४
विनय तपका लक्षण ---------- ५२४
वियनशब्दकी निरुक्ति ---------- ५२५
विनय रहितकी शिक्षा निष्फल ---------- ५२५
विनयके भेद ---------- ५२६
सम्यक्त्व विनय ---------- ५२६
दर्शन विनय और दर्शनाचारमें अन्तर ---------- ५२६
आठ प्रकारकी ज्ञानविनय ---------- ५२७
ज्ञानविनय और ज्ञानाचारमें भेद ---------- ५२८
चारित्र विनय ---------- ५२८
चारित्र विनय औऱ चारित्राचारमें भेद ---------- ५२८
औपचारिक विनयके सात भेद ---------- ५२९
औपचारिक विनयके वाचिक भेद ---------- ५२९
मानसिक औपचारिकके भेद ---------- ५३०
तपोविनय ---------- ५३१
विनय भावनाका फल ---------- ५३१
वैयावृत्य तप ---------- ५३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैयावृत्य तपका फल ---------- ५३२
स्वाध्यायका निरुक्तिपूर्वक अर्थ ---------- ५३४
वाचनाका स्वरूप ---------- ५३५
पृच्छनाका स्वरूप ---------- ५३५
अनुप्रेक्षाका स्वरूप ---------- ५३६
आम्नाय और धर्मोपदेश ---------- ५३६
धर्मकथाके चार भेद ---------- ५३७
स्वाध्यायके लाक्ष ---------- ५३७
स्तुतिरूप स्वाध्ययका फल ---------- ५३८
पञ्च नमस्कारका जप उत्क्ृष्ट स्वाध्याय ---------- ५३९
व्युत्सर्गके दो भेद ---------- ५४१
निरुक्तिपूर्वक व्युत्सर्गका अर्थ ---------- ५४१
उत्कृष्ट व्युत्सर्गका स्वामी ---------- ५४२
अन्तरंग व्युत्सर्गका स्वरूप ---------- ५४२
नियतकाल कायत्यागके भेद ---------- ५४२
प्राणान्त कायत्यागके तीन भेद ---------- ५४३
कान्दर्पी आदि दुर्भावना ---------- ५४६
संक्लेशरहित भावना ---------- ५४७
भक्त प्रत्याख्यानका लक्षण ---------- ५४८
व्युत्सर्ग तपका फल ---------- ५४८
चार ध्यान ---------- ५४९
तप आराधना ---------- ५५०

अष्टम अध्यय

षडावश्यकका कथन ---------- ५५१
ज्ञानीका विषयोपभोग ---------- ५५३
ज्ञानी और अज्ञानीके कर्मबन्धमें अन्तर ---------- ५५४
आत्माके अनादि प्रमादाचरणपर शोक ---------- ५५६
व्यवहारसे ही आत्मा कर्ता ---------- ५५७
रागादिसे आत्मा भिन्न है ---------- ५५९
आत्मा सम्यग्दर्शन रूप ---------- ५६०
आत्माकी ज्ञानरति ---------- ५६१
बेदज्ञानसे ही मोक्षलाभ ---------- ५६२
शुद्धात्माके ज्ञानकी प्राप्ति होने तक क्रियाका पालन ---------- ५६३
आवश्यक विधिका फल पुण्यास्रव ---------- ५६४
पुण्यसे दुर्गतिसे रक्षा---------- ५६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरुक्तिपूर्वक आवश्यकका लक्षण ---------- ५६६
आवश्यकके भेद ---------- ५६७
सामायिकका निरुक्तिपूर्वक लक्षण ---------- ५६८
भाव सामायिकका लक्षण ---------- ५७०
नाम सामायिकका लक्षण ---------- ५७१
स्थापना सामायिकका लक्षण ---------- ५७१
द्रव्य सामायिकका लक्षण ---------- ५७२
क्षेत्र सामायिकका लक्षण ---------- ५७३
भावसामायिकका विस्तार ---------- ५७४
भावसामायिक अवश्य करणीय ---------- ५७७
सामायिकका माहात्म्य---------- ५७८
चतुर्विंशतिस्तवका लक्षण---------- ५७९
नामस्तवका स्वरूप ---------- ५८१
स्थापनास्तवका स्वरूप ---------- ५८३
द्रव्यस्तवका स्वरूप ---------- ५८३
क्षेत्रस्तवका स्वरूप ---------- ५८६
कालस्तवका स्वरूप ---------- ५८६
भावस्तवका स्वरूप ---------- ५८७
व्यवहार और निश्चयस्तवके फलमें भेद ---------- ५८८
वन्दनका लक्षण ---------- ५८८
विनयका स्वरूप और भेद ---------- ५८९
वन्दनाके छह भेद ---------- ५९०
श्रावक औऱ मुनियोंके लिए अवन्दनीय ---------- ५९१
वन्दनाकी विधि, काल ---------- ५९२
पारस्परिक वन्दनका निर्णय ---------- ५९३
सामायिक आदि करनेकी विधि ---------- ५९३
प्रतिक्रमणके भेद ---------- ५९४
अन्य भेदोंका अन्तर्भाव ---------- ५९५
प्रतिकर्मणके कर्ता आदि कारक ---------- ५९७
प्रतिक्रमणकी विधि ---------- ५९८
नीचेकी भूमिकामें प्रतिक्रमण करनेपर उपकार न करनेपर अपकार ---------- ६००
समस्त कर्म और कर्मफल त्यागकी भावना ---------- ६०१
प्रत्याख्यानका कथन ---------- ६०६
प्रत्याख्येय और प्रत्याख्याता ---------- ६०८
प्रत्याख्यानके दस भेद ---------- ६०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्याख्यान विनययुक्त होना चाहिए ---------- ६०९
कायोत्सर्गका लक्षण आदि ---------- ६१०
कायोत्सर्गके छह भेद ---------- ६११
कायोत्सर्गका जघन्य आदि परिमाण ---------- ६१२
दैनिक आदि प्रतिक्रमण तथा कायोत्सरहगोंमें उच्छवासोंकी संख्या---------- ६१३-६१४
दिन-रातमें कायोत्सर्गोंकी संख्या ---------- ६१५
नित्य-नैमित्तिक क्रियाकाण्डसे परम्परा मोक्ष---------- ६१६
कृतिकर्म करनेकी प्रेरणा ---------- ६१७
नित्य देववन्दनामें तीनों कालोंका परिमाण ---------- ६१८
कृतिकर्म योग्य आसन ---------- ६१८
वन्दनाके योग्य देश ---------- ६१९
कृतिकर्मके योग्य पीठ ---------- ६२०
वन्दनाके योग्य तीन आसन ---------- ६२०
आसनोंका स्वरूप ---------- ६२०
वन्दनाका स्थान विशेष ---------- ६२२
जिनमुद्रा और योगमुद्राका लक्षण ---------- ६२२
वन्दनामुद्रा और मुक्ताशुक्ति मुद्राका स्वरूप ---------- ६२२
मुद्राओंका प्रयोग कब ---------- ६२३
आवर्तका स्वरूप ---------- ६२३
हस्त परावर्तनरूप आवर्त ---------- ६२५
शिरोनतिका लक्षण ---------- ६२५
चैत्यभक्ति आदिमें आवर्त और शिरोनति ---------- ६२६
स्वमत और परमतसे शिरोनतिका निर्णय ---------- ६२७
प्रमाणके भेद ---------- ६२८
कृतिकर्मके प्रयोगकी विधि ---------- ६२९
वन्दनाके बत्तीस दोष ---------- ६३०
कायोत्सर्गके बत्तीस दोष ---------- ६३३
कायोत्सर्गके चार भेद और उनका इष्ट-अनिष्ट फल ---------- ६३५
शरीरसे ममत्व त्यागे बिना इष्टसिद्धि नहीं ---------- ६३७
कृतिकर्मके अधिकारीका लक्षण ---------- ६३७
कृतिकर्मकी क्रमविधि ---------- ६३८
सम्यक् रीतिसे छह आवश्यक करनेवालोंके चिह्न ---------- ६३९
षडावश्यक क्रियाकी तरह साधुकी नित्य क्रिया भी विधेय ---------- ६४०
भावपूर्वक अर्हन्त आदि नमस्कारका फल ---------- ६४०
निःसही और असहीके प्रयोगकी विधि---------- ६४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमार्थसे निःसही और असही ---------- ६४१
नवम अध्याय
स्वाध्यायके प्रारम्भ और समापनकी विधि ---------- ६४२
स्वाध्यायके प्रारम्भ और समाप्तिका कालप्रमाण ---------- ६४३
स्वाध्यायका लक्षण और फल ---------- ६४३
विनयपूर्वक श्रुताध्ययनका माहात्म्य ---------- ६४५
जिनशासनमें ही सच्चा ज्ञान ---------- ६४५
साधुको रात्रिके पिछले भागमें अवश्य करणीय ---------- ६४६
परमागमके व्याख्यानादिमें उपयोग लगानेका माहात्म्य ---------- ६४७
प्रतिक्रमणका माहात्म्य ---------- ६४८
प्रतिक्रमण तथा रात्रियोग स्थापन और समान विधि ---------- ६४८
प्रातःकालीन देववन्दनाके लिए प्रोत्साहन ---------- ६४९
त्रैकालिक देववन्दनाकी विधि ---------- ६५०
कृतिकर्मके छह भेद ---------- ६५१
जिनचैत्य वन्दनाके चार फल ---------- ६५२
कृतिकर्मके प्रथम अंग स्वाधीनताका समर्थन ---------- ६५३
देववन्दना आदि क्रियाओंके करनेका क्रम ---------- ६५३
कायोत्सर्गमें ध्यानकी विधि ---------- ६५४
वाचिक और मानसिक जपके फलमें अन्तर ---------- ६५६
पंचनमस्कारका माहात्म्य ---------- ६५६
एक-एक परमेष्ठीकी भी विनयाक अलौकिक माहात्म्य---------- ६५७
कायोत्सर्गके अनन्तर कृत्य ---------- ६५८
आत्मध्यानके बिना मोक्ष नहीं ---------- ६५८
समाधिकी महिमा कहना अशक्य ---------- ६५९
देववन्दनाके पश्चात् आचार्य आदिकी वन्दना ---------- ६५९
धर्माचार्यकी उपासनाका माहातमम्य ---------- ६६०
ज्येष्ठ साधुओंकी वन्दनका माहात्म्य ---------- ६६०
प्रातःकालीन कृत्यके बादकी क्रिया ---------- ६६०
अस्वाध्याय कालमें मुनिका कर्तव्य ---------- ६६१
मध्याह्न कालका कर्तव्य ---------- ६६१
प्रत्याख्यान आदि ग्रहण करनेकी विधि ---------- ६६१
भोजनके अनन्तर ही प्रत्याख्यान ग्रहण न करनेपर दोष ---------- ६६२
भोजनसम्बन्धी प्रतिक्रमण आदिकी विधि ---------- ६६२
दैवसिक प्रतिक्रमण विधि ---------- ६६३
आचार्यवुन्दनाके पश्चात् देववन्दनाकी विधि---------- ६६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रात्रिमें निद्रा जीतनेके उपाय ---------- ६६३
जो स्वाध्याय करनेमें असमर्थ है उसके लिए देववन्दनाका विधान ---------- ६६४
चतुर्दशकीए दिनकी क्रिया ---------- ६६५
उक्त क्रियामें भूल होनेपर उपाय ---------- ६६६
अष्टमी और पक्षान्तकी क्रियाविधि ---------- ६६६
सिद्ध प्रतिमा आदिकी वन्दनाकी विधि ---------- ६६७
अपूर्व चैत्यदर्शन होनेपर क्रिया प्रयोगविधि ---------- ६६७
क्रियाविषयक तिथिनिर्णय ---------- ६६८
प्रतिक्रमण प्रयोग विधि ---------- ६६८
श्रुतपंचमीके दिनकी क्रिया ---------- ६७२
सिद्धान्त आदि वाचना सम्बन्धी क्रियाविधि ---------- ६७३
संन्यासमरणकी विधि ---------- ६७४
आष्टाह्निक क्रियाविधि ---------- ६७५
अभिषेक वन्दना क्रिया ---------- ६७५
मंगलोचर क्रियाविधि ---------- ६७५
वर्षायोग ग्रहण और त्यागकी विधि ---------- ६७५
वीर निर्वाणकी क्रियाविधि ---------- ६७६
पंचकल्याणके दिनोंकी क्रियाविधि---------- ६७७
मृत ऋषि आदिके शरीरकी क्रियाविधि ---------- ६७७
जिनबिम्ब प्रतिष्ठाके समयकी क्रियाविधि ---------- ६७८
आचार्यपद प्रतिष्ठापनकी क्रियाविधि ---------- ६७९
आचार्यके छत्तीस गुण ---------- ६७९
आचारवत्त्व आदि आठ गुण ---------- ६८१
उनका स्वरूप ---------- ६८१
दस स्थितिकल्प ---------- ६८४
प्रतिमायोगसे स्थित मुनिकी क्रियाविधि ---------- ६९०
दीक्षाग्रहण और केशलोंचकी विधि ---------- ६९१
दीक्षादानके बादकी क्रिया---------- ६९१
केशलोंचका काल ---------- ६९२
बाईस तीर्थंकरोंने सामायिकका भेदपूर्वक कथन नहीं किया ---------- ६९३
जिनलिंग धारणके योग्य कौन ---------- ६९३
केवल लिंगधारण निष्फल ---------- ६९५
लिंग सहित व्रतसे कषायविशुद्धि ---------- ६९५
भूमिशयनका विधान ---------- ६९६
खड़े होकर भोजन करनेकी विधि और काल ---------- ६९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खड़े होकर भोजन करनेका कारण ---------- ६९८
एकभक्त और एकस्थानमें भेद ---------- ६९९
केशलोंचका लक्षण और फल ---------- ७००
स्थान न करनेका समर्थन ---------- ७००
यतिधर्म पालनका फल ---------- ७०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org